केशवदासजी की अमीघूँट

और

जीवन-चरित्र

जिस का

हर एक पद उन महात्मा के अनुपम प्रेम व गहरे अभ्यास को दर्शाता है।

गूढ़ शब्दों के अर्थ व संकेत नोट में लिख दिये गये हैं

इलाहाबाद

बेलवेडियर स्टीम प्रिंटिंग वर्क्स में प्रकाशित हुई

सन् १९१५ ई०

दूसरी बार १०००] [दाम -)

॥ संतबानी ॥

संतबानी पुस्तक-माला के छापने का अभिप्राय जक्त-प्रसिद्ध महात्माओँ की बानी और उपदेश को जिन का लोप होता जाता है बचा लेने का है। जितनी बानियाँ हमने छापी हैँ उन मेँ से विशेष तो पहिले छपी ही नहीँ थीँ और जो छपी थीँ सो प्रायः ऐसे छिन्न भिन्न और बेजोड़ रूप मेँ या क्षेपक और त्रुटि से भरी हुई कि उन से पूरा लाभ नहीँ उठ सकता था।

हमने देश देशान्तर से बड़े परिश्रम और व्यय के साथ हस्तलिखित दुर्लभ ग्रंथ या फुटकल शब्द जहाँ तक मिल सके असल या नक़ल कराके मँगवाये। भर सक तो पूरे ग्रंथ छापे गये हैँ और फुटकल शब्दोँ की हालत मेँ सर्व-साधारन के उपकारक पद चुन लिये हैँ। प्रायः कोई पुस्तक बिना दो लिपियोँ का मुक़ाबला किये और ठीक रीति से शोधे नहीँ छापी गई है और कठिन और अनूठे शब्दोँ के अर्थ और संकेत फुट-नोट मेँ दे दिये हैँ। जिन महात्मा की बानी है उन का जीवन-चरित्र भी साथ ही छापा गया है और जिन भक्तोँ और महापुरुषोँ के नाम किसी बानी मेँ आये हैँ उन के वृत्तांत और कौतुक संक्षेप से फुट-नोट मेँ लिख दिये गये हैँ।

दो अंतिम पुस्तकेँ इस पुस्तक-माला की अर्थात संतबानी संग्रह भाग १ [साखी] और भाग २ [शब्द] छप चुकीँ जिन का नमूना देख कर महामहोपाध्याय श्री पंडित सुधाकर द्विवेदी बैकुंठ-बासी ने गद्गद होकर कहा था—"न भूतो न भविष्यति"।

अब कोई नई बानी किसी प्राचीन पुरुष की हमारे पास छपने को नहीँ है सिवाय कबीर साहिब के विशेष पदोँ के जो उन की शब्दावली के नये छापे मेँ बढ़ाये जा रहे हैँ।

पाठक महाशयोँ की सेवा मेँ प्रार्थना है कि इस पुस्तक-माला के जो दोष उन की दृष्टि मेँ आवेँ उन्हेँ हम को कृपा करके लिख भेजेँ जिस से वह दूसरे छापे मेँ दूर कर दिये जावेँ।

यद्यपि ऊपर लिखे हुए कारनोँ से इन पुस्तकोँ के छापने मेँ बहुत ख़र्च होता है तौ भी सर्व-साधारन के उपकार हेतु दाम आध आना फ़ी आठ पृष्ठ (रायल) से अधिक नहीँ रक्खा गया है।

प्रोप्राइटर, बेलवेडियर छापाख़ाना,

नवम्बर सन् १९१५ ई०

इलाहाबाद।

जीवन-चरित्र

परम भक्त केशवदासजी के जीवन का हाल कुछ मालूम नहीं होता सिवाय इसके कि वह जाति के बनिया यारी साहिब के चेले और बुल्ला साहिब के गुरुभाई थे जिनके पुनीत गुरु घराने में गुलाल साहिब, भीखा साहिब और पलटू साहिब सरीखे साध और संत प्रगट हुए। इस हिसाब से उन के जीवन का समय दर्मियान बिक्रमी संवत १७५० और १८२५ के ठहरता है।

इन का यह छोटा सा ग्रंथ कई बरस की खोज से मिला है। सचमुच जैसा कि उस का नाम (अमीघूँट) है प्रति पद उस का अमी की घूँट है और उनके अनुपम प्रेम, गहिरे अभ्यास और ऊँची गति को लखाता है॥

केसवदासजी की अमीघूँट

राग मंगल

(१)

सतगुरु परम निधान, ज्ञानगुरु[1] तें मिलै ।
पावै पद निरबान, परम गति तब दिलै[2] ॥ १ ॥
अर्थ धर्म मोच्छ काम, चारि फल होवई ।
सत्त सुकृति के अंस, साध लिये सो वई ॥ २ ॥
जेहिं निरखत मन मगन, सो दुबिधि नसावई ।
अद्भुत रूप अबिनासि, सो घटहिं समावई ॥ ३ ॥
ओअं सब्द अलेख, लखि नरक निवारई ।
जीवन मुक्ति बिदेस, पाँच पचीसहिं हारई ॥ ४ ॥

॥ दोहा ॥

सांख्य जोग यह धर्म है, कर्म बीज को जार ।
जोई था सोई हुआ, देखा सुन्न मँझार ॥ ५ ॥

अबिचल अगम अगाध, साध गति लखै न कोई ।
प्रेम प्रकास बास आकासहिं, निसु दिन होई ॥ ६ ॥

---

(१) गुरु-ज्ञान । (२) दिलावै ।

॥ दोहा ॥

बिना सीस कर चाकरी, बिन खाँड़े संग्राम ।
बिन नैनन देखत रहै, निसु दिन आठो जाम ॥ ७ ॥
प्रेम प्रीति यह रीति, जोति भ्रमहिं ढहावई ।
सदा अनंद बिनोद मिलै, अबिगत सुख पावई ॥८॥

॥ दोहा ॥

निर्गुन राज समाज है, चँवर सिंहासन छत्र ।
तेहि चढ़ि यारी गुरु दियो, केसोहिं अजपा मंत्र ॥९॥

——:o:——

(२)

धनि सो घरी धनि बार, जबहिं प्रभु पाइये ।
प्रगट प्रकास हजूर, दूर नहिं जाइये ॥१॥

॥ छंद ॥

नहिं जाइ दूर हजूर साहिब, फूलि सब तन मैं रह्यो ।
अमर अछय सदा जुगन जुग, जक्त दीपक उगि रह्यो ॥२॥
निरखि दसौ दिसि सर्व सोभा, कोटि चंद सुहावनं ।
सदा निरभय राज नित सुख, सोई केसो ध्यावनं ॥३॥
पूरन सर्व निधान, जानि सोइ लीजिये ।
निर्मल निर्गुन कंत, ताहि चित दीजिये ॥४॥

॥ छंद ॥

दीजिये चित रीझि कै उत, बहुरि इताहिं न आइये ।
जहं तेज पुंज अनंत सूरज, गगन मैं मठ छाइये ॥५॥

लिये घट पट खोलि कै प्रभु, अगम गति लव गति करी ।
वढ़ो अधिक सुहाग केसो, बीछुरत नाहिं इक घरी ॥६॥

अद्भुत भेख बनाय, अलेख मनाइये ।
निसु बासर करि प्रेम, सो कंठ लगाइये ॥७॥

॥ छंद ॥

लाइये घट काढ़ि कै [illegible], [illegible] सोहं भरि रहो ।
वढ़ो अधिक सुहाग सुंदरि[१], अलख स्वामी रमि रहो॥८॥
मिल्यो प्रभु अनूप उदै अति, सर्ब गति जा सौं भई ।
आदि अंत अरु मध्य सोई, मिलि पिया केसो मई ॥९॥

फूलि रह्यो सब ठाँव, तौ धरनि अकास मैं ।
सो त्रिभुवनपति नाथ, निरखि लियो आप मैं ॥१०॥

॥ छंद ॥

निरखि आपु अघात माहीं, सकल सुख रस सानिये ।
पिवहि अमृत सुरति भर करि, संत बिरला जानिये ॥११॥
कोटि बिस्नु अनंत ब्रह्मा, सदा सिव जेहि ध्यावहीं ।
सोइ मिल्यो सहज सरूप केसो, अनँद मंगल गावहीं ॥१२॥

---

(१) स्त्री ।

फुटकर शब्द

॥ शब्द ३ ॥

अबिनासी दूलह मन मोह्यो, जा को निगम बतावै नेत[१] ॥टेक
निरंकार निरअंक निरंजन, निर्बिकार निरलेस ।
अगह अजोनि भवन भरि पायो, सतगुरु के उपदेस ॥१॥
सुरति निरति के बाजन बाजे, चित चेतन सँग हेत ।
पाँच पचीस एक सँग खेलहिं, निर्गुन के यह खेत ॥२॥
सुख सागर अनुभव फल फूली, जगमग सुंदर सेत ।
नखसिख पूरि रहे दसहूँ दिसि, सब घट अबिगत जेत ॥३
अजर प्रकास जोति बिनु पावक, परम निरंतर देख ।
अनँत भानु ससि कोटिक निर्मल, कैसो आतम लेख ॥४॥

॥ शब्द ४ ॥

ऐसे संत बिबेकी होरी खेलै हो, जा के गुरुमुख दृढ़ बिस्वास ।
स्रवन नैन रसना मिलो है, आतम राम के पास ॥टेक॥
इक रँग रूप बनी सब सुंदरि, सोभा बनो है ठाठ ।
बाजत ताल मृदंग झाँझ डफ, तिरबेनी के घाट ॥१॥
आनँद केलि होत निसु बासर, बाढ़त प्रेम हुलास ।
अगर अबीर अखंड कुमकुमा, केसर सदा सुबास ॥२॥
सहज सुभाव को खेल बन्यो है, फगुआ बरनि न जात ।
सुरति सुहागिनि उठि उठि लागहि, अबिनासी के गात ॥३॥

---

(१) न इति ।

लघु दीरघ मिलि चाचरि जोरी, होरी रचो अकास।
पावक प्रेम सहज सौं फूँक्यो, दसौ दिसा परकास ॥४॥
फेँट गही छबि निरखि रही है, मंद मंद मुसुकात।
फगुवा दान दरस प्रभु दीजै, केसो जन बलि जात ॥५॥

॥ शब्द ५ ॥

निरमल कंत संत हम पाया।
कोटि सूर जा की निर्मल काया ॥१॥
प्रेम बिलास अमृत रस भरिया,
अनुभौ चँवर रैन दिन ढुरिया ॥२॥
आनँद मंगल सोहं गावैं,
सुख सागर प्रभु कंठ लगावैं ॥३॥
सत्य पुरुष धुनि अति उजियारी,
कोटि भानु ससि छवि पर वारी ॥४॥
तेज पुंज निर्गुन उँजियारा,
कह केसो सोइ कंत हमारा ॥५॥

॥ शब्द ६ ॥

निरखि रूप मन सहज समाना,
मैं तैं मिटि गो भर्म पराना[१] ॥१॥
अच्छर माहिँ निअच्छर देखा,
सोई सब जीवन का लेखा ॥२॥

---

(१) भाग गया।

ऐसो भेद जो जानै कोई,
ता को आवागवन न होई ॥३॥
जैसे उग्र ऋनी कहवाया,
मिटि गा रूप भेष नहिं माया[1] ॥४॥
ऐसे निर्मल है ब्रह्मज्ञानी,
सदा बखानहि अमृत बानी ॥५॥
उदित पुरुष निरमल जेहिं काया,
सोई साहिब केसो छाया[2] ॥६॥

॥ शब्द ७ ॥

छाया काया तेँ प्रभु न्यारा,
धरनि अकास के बाहर पारा ॥१॥
अगम अपार निरंतर बासी,
हलै न टलै अगम अबिनासी ॥२॥
वा कहँ अद्भुत रूप न रेखा,
अगम पुरुष प्रभु सब्द अलेखा ॥३॥
निज जन जाय तहाँ प्रभु देखा,
आदि न अंत नाहिं कछु भेखा ॥४॥
मिलि अंगम सुख सहज समाया,
या बिधि केसो बिसरी काया ॥५॥

---

(१) जैसे पूनोँ का तेजमान चाँद राहु का क़र्ज़दार कहलाता है और राहु उसे ग्रस लेता है वैसे ही निर्मल जीव देँह धारन करके माया का ऋनी हो जाता है और वह उसे ग्रस लेती है, जब ज्ञान का प्रकाश हो तो माया और भेष सब का लोप हो जाय। (२) भरपूर है।

॥ शब्द ८ ॥

पिय थारे[१] रूप भुलानो हो ।
प्रेम ठगौरी मन हर्यो, बिन दाम बिकानो हो ॥ १ ॥
भँवर कँवल रस बेधिया, सुख स्वाद बखानो हो ।
दीपक ज्ञान पतंग सोँ, मिलि जोति समानो हो ॥ २ ॥
सिंधु भरा जल पूरना, सुख सीप समानो हो ।
स्वाँति बुंद सोँ हेतु है, ऊर्ध मुख लगानो हो ॥ ३ ॥
नैन स्रवन मुख नासिका, तुम अंतर जानो हो ।
तुम बिनु पलक न जीजिये, जस मीन अरु पानी हो ॥४॥
ब्यापक पूरन दसो दिसि, परगट पहिचानो हो ।
केसो यारो गुरु मिले, आतम रति मानो हो ॥ ५ ॥

॥ शब्द ९ ॥

म्हारे हरिजू सूँ जुरलि सगाई हो ।
तन मन प्रान दान दै पिय को, सहज सरूपम पाई हो ॥१॥
अरध उरध के मध्य निरंतर, सुखमन चौक पुराई हो ।
रवि ससि कुंभक अमृत भरिया, गगन मँडल मठ छाई हो २
पाँच सखी मिलि मंगल गावहिं, आनँद तूर बजाई हो ।
प्रेम तत्त दीपक उँजियारो, जगमग जोति जगाई हो ॥३॥
साध संत मिलि किये बसौंठी[२], सतगुरु लगन लगाई हो ।
दरस परस पतिबरता पिय की, सिव घर सक्ति बसाई हो ॥४
अमर सुहाग भाग उँजियारो, पूर्ब प्रीति प्रगटाई हो ।
रोम रोम मन रस के बसि भइ, केसो पिय मन भाई हो ॥५॥

---

(१) तुम्हारे । (२) बिचौलिया का काम ।

॥ शब्द १० ॥

निर्गुन नाम निधान, करो मन आरति हो ॥ टेक ॥
गंगा जमुना सरसुती, सुखमन घर बिसराम ।
निर्झर झरत अमृत रस निरमल, पीवहिं संत सुजान ॥१॥
द्वादस पदुम पदारथ, मुक्ता नाम कि खान ।
चंदन चौक सरद उँजियारो, सकल बिस्व[1] को पान ॥२
अगम अगोच्चर गुंजत निसु दिन, तन मन प्रान समान ।
अमर बिदेह भयो पद परसत, तिमिर मिटायो भान ॥३॥
कारज करम करै सो करता, अबिनासी निजु जान ।
औरन को अदृष्ट है कैसो, सोई पुरुष पुरान ॥ ४ ॥

---

(१) संसार।

रेख़ता

(११)

खाक के गात मैं पाक साहिब मिल्यो,
सुनि गुरू बचन परतीत आई ।
पाँच अरु तीन पच्चीस कलिमल कटे,
आप को साफ कर तुही साईं ॥
सिफत क्या करौं सोइ अवर नाहिं दूसरो,
बैन सँग बोलता आप माहीं ।
सेत दरियाव जगमगित प्रभु केसवा,
मिलि गयो बुंद दरियाव माहीं ॥

(१२)

स्याम के धाम मैं बैठि बातैं करै,
हरि-जन सोई हरि-भक्त नीता ।
आदि को सोधि कै मद्ध को बाँधि कै,
अंत को छेदि रन सूर जीता ॥
काम अरु क्रोध को लोभ अरु मोह को,
ज्ञान के बान सोँ मारि लीता ।
जानि जन केसवा मानि मन मैं रहा,
यारी सतगुरु मिला भेद दीता ॥

(१३)

सोई निज संत जिन अंत आपा लियो,
जियो जुग जुग गगन बुद्धि जागी ।
प्रान आपान[१] असमान मैं थिर भया,
सुन्न के सिखर पर जिकिर[२] लागी ॥
रहत घर बास बिनु स्वास का जीव है,
सक्ति मिलि सीव सेँ सुरति पागी ।
अकह आलेख आदेख को देखिया,
पेखि केसो भयो ब्रह्म रागी ॥

(१४)

गगन मगन धुनि लगन लगी,
सुनत सुनत तन त्रिप्त भई ।
जगर मगर नहिँ डगर बगर[३] नहिँ,
रबि ससि निसु दिन भाव नहीं ॥
प्रान गवन हरि पवन मवन[४] करि,
मिलि सन्मुख पिय बाँह गही ।
सत रति सत्त पती हम पावल,
केसोदास सुहाग सही ॥

---

(१) वायु के नाम । (२) सुमिरन । (३) राह कुराह । (४) स्वाँसा और प्रान को रोक के ।

(१५)

निसु बासर बस्तु बिचारु सदा,
मुख साच हिये करुना[1] धन है।
अघ निग्रह संग्रह धर्म कथा,
निपरिग्रह साधन को गुन है[2]॥
कह केसो भीतर जोग जगै,
इत बाहर भोग मई तन है[3]।
मन हाथ भये जिन के तिन के,
बन ही घर है घर ही बन है॥

---

(१) दया। (२) पाप को छोड़ना व धर्म को ग्रहन करना और फिर दोनों से अलग रहना यह गुन साध का है। (३) साधजन अंतर से मालिक की भक्ति जोग में लगे रहते हैं और बाहर से संसार व भोगों में लिप्त दीख पड़ते हैं।

कवित्त

(१६)

दौलत निसान बान घरे खुदी अभिमान,
करत न दाया काहू जीव की जगत मैं।
जानत है नीके यह फीको है सकल रंग,
गहे फिरै काल फंद मारै गो छिनक मैं॥
घेरा डेरा गज बाज[1] झूठो है सकल साज,
बादि[2] हरि नाम कोऊ काज नाहिं अंत कै।
बार बार कहौं तोहि छोडु मान माया मोह,
केसा काहे को करै छोभ मोह काम कै॥

---

(१) घोड़ा। (२) छोड़कर।

साखी
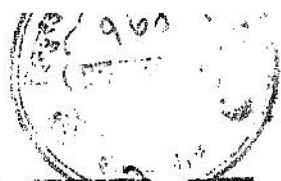
सुरति समानी ब्रह्म मैं, दुबिधा रह्यो न कोय।
केसो संभलि[1] खेत मैं, परै सो संभलि होय ॥१॥

सात दीप नौ खंड के, ऊपर अगम अवास।
सब्द गुरू केसो भजै, सो जन पावै वास ॥२॥

आस लगैं बासा मिलै, जैसी जा को आस।
इक आसा जग बास है, इक आसा हरि पास ॥३॥

आसा मनसा सब थकी, मन निज मनहिं मिलान।
ज्यौं सरिता समुँदर मिली, मिटि गो आवन जान ॥४॥

जेहि घर केसो नहिं भजन, जीवन प्रान अधार।
सो घर जम का गेह है, अंत भये ते छार ॥५॥

जगजीवन घट घट बसै, करम करावन सोय।
बिन सतगुरु केसो कहै, केहि बिधि दरसन होय ॥६॥

सतगुरु मिल्यो तो का भयो, घट नहिं प्रेम प्रतीत।
अंतर कोर न भींजई, ज्यौं पत्थल जल भीत ॥७॥

केसो दुबिधा डारि दे, निर्भय आतम सेव।
प्रान पुरुष घट घट बसै, सब महँ सब्द अभेव ॥८॥

पंच तत्त गुन तीन के, पिंजर गढ़े अनंत।
मन पंछी सो एक है, पारब्रह्म को अतंत[2] ॥९॥

ऐसो संत कोइ जानि है, सत्त सब्द सुनि लेह।
केसो हरि सौं मिलि रहो, नेवछावर करि देह ॥१०॥

भजन भलो भगवान को, और भजन सब धंध।
तन सरवर[3] मन हंस है, केसो पूरन चंद ॥११॥

---

(१) साँभर निमक। (२) अत्यंत, बहुत। (३) तालाब।

फ़िहरिस्त छपी हुई पुस्तकों की

पुस्तक	दाम
कबीर साहिब का साखी-संग्रह	॥।)
कबीर साहिब की शब्दावली और जीवन-चरित्र, भाग १ तीसरा एडिशन ...	॥)
" " " भाग २	॥)
" " " भाग ३	।)
" " " भाग ४	=)
" " ज्ञान-गुदड़ी, रेख़ते और झूलने	।)
" " अखरावती दूसरा एडिशन	-)॥
धनी धरमदास जी की शब्दावली और जीवन-चरित्र	।=)
तुलसी साहिब (हाथरस वाले) की शब्दावली मय जीवन-चरित्र भाग १ ...	॥।)
" " " भाग २, पद्मसागर ग्रंथ सहित ...	॥।)
" " रत्न सागर मय जीवन-चरित्र ...	॥।=)
" " घट रामायन दो भागों में, मय जीवन-चरित्र,	
भाग १ ...	१)
" " भाग २ ...	१)
गुरु नानक साहिब की प्राण-संगली सटिप्पण, जीवन-चरित्र सहित	
भाग १ ...	१)
" " " " भाग २ ...	१)
दादू दयाल की बानी, भाग १ [साखी] जीवन-चरित्र सहित ...	१-)
" " भाग २ [शब्द]	॥।-)
सुंदर बिलास और सुंदरदास जी का जीवन-चरित्र	॥=)
पलटू साहिब भाग १—कुंडलिया और जीवन-चरित्र [नया] ...	॥)
" " भाग २—शब्द	।-)॥
" " भाग २—रेख़ते, झूलने, अरिल, कवित्त और सवैया [नया] ..	॥)
" " भाग ३—रागों के शब्द या भजन और साखियाँ [नया] ...	॥)
जगजीवन साहिब की शब्दावली और जीवन-चरित्र, भाग १ ...	॥-)
" " " भाग २	॥-)
दूलन दास जी की बानी और जीवन-चरित्र	=)
चरनदासजी की बानी और जीवन-चरित्र, भाग १	॥)॥
" " भाग २	।=)॥
गरीबदास जी की बानी और जीवन-चरित्र	॥।=)
रैदासजी की बानी और जीवन-चरित्र	।-)॥

दरिया साहिब (बिहार वाले) का दरियासागर और जीवन-चरित्र ... ।-)
" " के चुने हुए पद और साखी ... =)॥
दरिया साहिब (मारवाड़ वाले) की बानी और जीवन-चरित्र ... ।)॥
भीखा साहिब की शब्दावली और जीवन-चरित्र ... ... ।=)
गुलाल साहिब (भीखा साहिब के गुरु) की बानी और जीवन-चरित्र ... ॥-)॥
बाबा मलूकदास जी की बानी और जीवन-चरित्र ... ... ≡)
गुसाईं तुलसीदासजी की बारहमासी ... ...)॥
यारी साहिब की रत्नावली और जीवन-चरित्र ... ... -)॥
बुल्ला साहिब का शब्दसार और जीवन-चरित्र ... ... =)॥
केशवदास जी की अमीघूँट और जीवन-चरित्र ... ... -)
धरनीदास जी की बानी और जीवन-चरित्र ... ... ।)
मीरा बाई की शब्दावली और जीवन-चरित्र (दूसरा एडिशन) ... ।-)॥
सहजो बाई का सहज-प्रकाश जीवन-चरित्र सहित (तीसरा एडिशन विशेष शब्दों के साथ) ... ।-)
दया बाई की बानी और जीवन-चरित्र ... ... =)॥
संतबानी संग्रह, भाग १ [साखी] प्रत्येक महात्मा के संक्षिप्त जीवन-चरित्र सहित ... १)
" " भाग २ [शब्द] ऐसे महात्माओं के संक्षिप्त जीवन-चरित्र सहित जिन की साखी भाग १ में नहीं दी हैं १)
अहिल्याबाई का जीवन-चरित्र अँग्रेज़ी पद्य में ... ... =)

दाम में डाक महसूल व वाल्यू-पेएबल कमिशन शामिल नहीं है वह इसके ऊपर लिया जायगा।

मनेजर, बेलवेडियर प्रेस,
इलाहाबाद।

Printed at The Belvedere Steam Printing Works, Allahabad by E. Hall.